जब तक कि वह कार्य सिद्ध न हो जाय, निश्चय ही वह अपने कार्य में सफल होगा इसमें कोई सन्देह नहीं ।

संकटनाश के लिये गणपति से संबंधित एक अन्य महत्वपूर्ण स्तोत्र 'संकटनाशन स्तोत्र' है । यह स्तोत्र भी अपने आप में महत्वपूर्ण है, व्यक्ति के जीवन में कितना ही भयंकर संकट क्यों न आया हो, यदि इस स्तोत्र का पाठ नित्य श्रद्धापूर्वक करे तो वह उस संकट से मुक्ति प्राप्त करने में सफल हो जाता है । इस स्तोत्र का प्रभाव मैंने यहां तक देखा है कि व्यक्ति जेल से मुक्त हो जाता है तथा मुकदमें में सफलता प्राप्त कर लेता है ।

जिन व्यक्तियों पर मुकदमें चल रहे हों, या शत्रु परेशान कर रहे हों तो उस व्यक्ति के लिये यह स्तोत्र कल्प वृक्ष के समान है। उन्हें चाहिए कि इस स्तोत्र का पाठ नित्य पांच बार करे, और जब तक इस स्तोत्र का पाठ चालू रखे जब तक कि उसे अपने कार्य में सिद्धि प्राप्त न हो जाय, शत्रु विजय, मुकदमें में सफलता तथा बाधाओं की शान्ति के लिये इससे बढ़कर कोई अन्य स्तोत्र नहीं है ।

गणेश पुराण में समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये 'गणेशाष्टक' दिया गया है, यह गणेशाष्टक ऋद्धि-सिद्धि के लिये तथा व्यापारिक उन्नति के लिये अत्यन्त फलप्रद है, जिस व्यक्ति का व्यापार भली प्रकार न जम रहा हो या आर्थिक घाटा हो रहा हो अथवा वह आर्थिक दृष्टि से परेशानी अनुभव कर रहा हो तो उसे चाहिए कि वह गणेशाष्टक का पाठ नित्य करे। आर्थिक सम्पन्नता के लिये यह अष्टक अद्भुत चमत्कारी है । बिना कुछ भी व्यय किये केवल मात्र इसका पाठ ही व्यक्ति की सम्पन्नता में सहायक होता है । मैंने जिन-जिन व्यक्तियों को इस स्तोत्र का पाठ करने की सलाह दी है उन्हें आशाजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं । उनके पत्रों से ध्वनित होता है कि इस स्तोत्र का पाठ करने के बाद से उन्हे व्यापार में अद्भुत सफलता मिली है । बेकारी का दौर समाप्त हो गया है, तथा आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहा है, मेरी तो यहां तक मान्यता है कि यदि व्यक्ति सभी दृष्टियों से सुखी, सफल एवं सम्पन्न भी हो तब भी उसे इस गणेशाष्टक का नित्य पाठ करना चाहिए । ऐसा करने से उसके जीवन में किसी प्रकार से कोई अभाव नहीं रह सकता ।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

संकटनाश के लिये

संकष्टनाशन स्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायु कामार्थसिद्धये ।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।
लम्बोदरं पंचमं च षष्टं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं य : पठेन्नर ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ।।
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशय : ।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा य : समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादत : ।।

———०———

Download Book ~ https://www.hindibook.in

इस प्रयोग को करने के लिए किसी भी प्रकार की माला, गुटिका या यंत्र की आवश्यकता नहीं

संकटनाशन गणेश स्तोत्र

प्रिय बंधुओं, जिस सुलभ और सुपरिचित प्रयोग की चर्चा सोमवार को की गई थी उसे आज गुरुवार को प्रेषित किया जा रहा है।

जीवन में प्रगति पथ पर बढ़ने के लिए सर्वप्रथम रुकावटों को समाप्त करना आवश्यक है, विघ्नों का विनाश करना आवश्यक है। भगवान गणपति को विघ्नहर्ता कहा जाता है, क्योंकि वे विघ्न समाप्त करके पूर्ण सफलता प्राप्ति में अत्यंत महत्वपूर्ण सहायता करते हैं।

मुकदमा, शत्रु बाधा, विभिन्न प्रकार के संकट जीवन के प्रगति पथ पर खड़े विघ्न ही तो हैं। प्रस्तुत प्रयोग साधारण सा प्रतीत होने के बाद भी संकट और विघ्नों को समाप्त करने में पूर्ण प्रभावशाली है।

जो साधक बंधु स्तोत्र पाठ से पूर्व भगवान गणपति की पूजा अर्चना के बारे में और जानकारी चाहते हैं उन्हें चाहिए कि वे सदगुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी की सशक्त लेखनी द्वारा सृजित संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करें।
आशा है कि प्रत्येक गुरु भाई और गुरु बहन इस महान स्तोत्र प्रयोग से अवश्य ही लाभ उठाएंगे।

Download Book ~ https://www.hindibook.in